Sampreshan
UGC CARE GROUP 1 ISSN: 2347-2979
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 3, September 2024

हिन्दी ग़ज़लों में प्रेम का निरूपण

डॉ. अशोक कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर (VSY) हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय पावटा, (राज.)

प्रेम का मानव जीवन में बहुत महत्त्व है। प्रेम के कारण ही आपसी भाईचारा, रिश्ते–नाते तथा आपसी संबंध बनते हैं। प्रेम ग़ज़ल का भी मूल विषय रहा है। 'ग़ज़ल' शब्द मूलतः अरबी भाषिक है जिसका अर्थ 'सूत कातना' माना गया है। इसके साथ ही ग़ज़ल एक काव्य विधा का भी रूप है। ग़ज़ल काव्य का विकास अरबी की बजाय फारसी में सर्वाधिक माना गया है। जैसा कि एक मत यह है कि ''ग़ज़ल विधा का उद्‌भव अरबी साहित्य में न होकर फारसी साहित्य में हुआ। जब फारसी के साहित्यकारों का हिन्दुस्तान से सम्पर्क हुआ तो ग़ज़ल की विधा फारसी से उर्दू तथा हिन्दी में आयी।''[1] वास्तव में ग़ज़ल विधा की शुरुआत हिन्दी के अलावा अन्य भाषाओं में हुई। ग़ज़ल विधा को हिन्दी में लाने का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है। अमीर खुसरो का समय लगभग तेरहवीं सदी के आस–पास का है। उन्होंने ईरानी और भारतीय संस्कृति को आपस में जोड़ने के लिए भाषाओं का मिश्रण करते हुए अपने साहित्य की रचना की। ऐसा माना जाता है कि अमीर खुसरो को फारसी, उर्दू के अलावा भारतीय भाषाओं का भी अच्छा–खासा ज्ञान था। अमीर खुसरो ने भी अपनी ग़ज़लों में प्रेम को महत्त्व दिया है। उनका एक शेर द्रष्टव्य है –

''जब यार देखा नैनभर, दिल की गई चिन्ता उतर

ऐसी नहीं कोई अजब, राखे उसे समझाय कर।''[2]

वास्तव में चाहे कोई भी विधा हो, वह अपने मूल विषय से वंचित नहीं रह सकती। ग़ज़ल का तो नाम सुनते ही पाठक के जह्न में प्रेमाभिव्यक्ति की भावनाएं जाग्रत हो जाती हैं। प्रेम के दो रूप माने जाते हैं जिसमें एक आध्यात्मिक तथा दूसरा सांसारिक प्रेम प्रमुख है। अमीर खुसरो के बाद कबीर ने भी ग़ज़ल शैली में लिखा है। उनका एक शेर है –

''हमन है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या

रहें आज़ाद या जग से हमन दुनिया से यारी क्या''[3]

कबीर के इस शेर में आध्यात्मिक प्रेम के दर्शन होते हैं। उन्होंने ईश्वर को अपना प्रेमी माना है। अमीर खुसरो और कबीर से शुरू हुई ये हिन्दी ग़ज़ल लेखन की परम्परा भारतेन्दु युग तक पहुंची। हाँ इसके बीच में कुछ अन्य साहित्यकारों ने भी ग़ज़ल शैली को अपनाया। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी हिन्दी साहित्य के महान विद्वान माने जाते हैं। उन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं में अपनी लेखनी चलायी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ग़ज़ल शैली में लिखा। उनकी ग़ज़ल का एक शेर द्रष्टव्य है –

''दिल मेरा ले गया दग़ा करके

बेवफ़ा हो गया वफ़ा करके''[4]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के इस शेर में प्रेमाभिव्यक्ति की भावना है। भारतेन्दु युग में और भी साहित्यकारों ने ग़ज़ल को अपनाया है। भारतेन्दु युग के उपरान्त द्विवेदी युग का आरम्भ हुआ। द्विवेदी युग में भी श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' लाला भगवानदीन आदि कवियों के काव्य में ग़ज़ल शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। लाला भगवानदीन की ग़ज़ल का एक शेर है –

"तुमने पैरों में लगाई मेंहदी

मेरी आँखों में समाई मेंहदी"[5]

द्विवेदी युगीन साहित्यकारों ने भी ग़ज़ल काव्य को अपनाया। द्विवेदी युग के उपरान्त छायावादी युग का आरम्भ हुआ। छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद तथा सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने ग़ज़ल शैली में लिखा। इनकी ग़ज़लों में भी प्रेमाभिव्यक्ति के दर्शन होते हैं। जयशंकर प्रसाद की ग़ज़ल का एक शेर है –

"सरासर भूल करते हैं, उन्हें जो प्यार करते हैं,

बुराई कर रहे हैं और अस्वीकार करते हैं"[6]

वास्तव में हिन्दी ग़ज़लों में प्रेम तत्व की प्रधानता देखने को मिलती है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने प्रेमाभिव्यक्ति की भावनाओं का जिक्र अपनी ग़ज़लों में किया है। छायावाद के बाद छायावादोत्तर काल में भी ग़ज़लें लिखी गई। इस दौरान रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', हरिकृष्ण प्रेमी आदि अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी में ग़ज़लें लिखी। हरिकृष्ण प्रेमी की ग़ज़ल का एक शेर है –

"दर्द दिल की धड़कनों में कह रहा है रात दिन कुछ,

कौन जाने कह सकेगा दिल कभी पूरी कहानी"[7]

प्रस्तुत शेर में प्रेम का भाव समाहित है। छायावादोत्तर युग के बाद प्रयोगवादी कवियों ने भी ग़ज़ल विद्या को अपनाया इस कड़ी में अज्ञेय, त्रिलोचन शास्त्री और शमशेर बहादुर सिंह आदि कवियों ने ग़ज़ल शैली में लिखा। इनके ग़ज़ल काव्यों में भी प्रेम की भावनाओं का जिक्र मिलता है। हाँ इस दौरान हिन्दी ग़ज़ल कुछ जनभावनाओं से भी जुड़ने लगी। शमशेर बहादुर सिंह की ग़ज़ल का एक शेर जिसमें प्रेम का भाव है –

''अपने दिल का हाल, यारों हम किसी से क्या कहें

कोई भी ऐसा नहीं मिलता जिसे अपना कहें''[8]

साठोत्तरी दौर आने तक हिन्दी में ग़ज़लें तो लिखी तो गई लेकिन इनका इतना प्रभाव नहीं दिखता। साठोत्तरी दौर की हिन्दी ग़ज़लों में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। इस दौरान दुष्यन्त कुमार का हिन्दी ग़ज़ल के क्षेत्र में आगमन हुआ। दुष्यन्त कुमार ने आपातकाल के दौरान जनभावनाओं को समझा तथा उनको अपनी ग़ज़लों का माध्यम बनाया। उनकी ये ग़ज़लें बड़ी प्रभावी सिद्ध हुई। आगे चलकर इन्हीं से समकालीन हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा की शुरुआत स्वीकार की गई। लेकिन दुष्यन्त कुमार ने ग़ज़ल के मूल विषय प्रेम का परित्याग नहीं किया। उनकी ग़ज़लों में प्रेम का स्वर मौजूद है। उनका एक शेर है –

''अगर ख़ुदा न करे सच ये ख़्वाब हो जाए,

तेरी सहर हो मेरा आफ़ताब हो जाए''[9]

निःसंदेह दुष्यन्त कुमार के इस शेर में प्रेम का भाव दृष्टिगत होता है। दुष्यन्त कुमार ने भले ही अपनी ग़ज़लों में अपने समय तथा समाज की भावनाओं को स्थान दिया अपितु उन्होंने प्रेम भावना को भी अपनी ग़ज़लों का विषय बनाया। इनके अलावा अनेक समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम को महत्त्व दिया है। गोपालदास सक्सेना 'नीरज' की ग़ज़ल का एक शेर है –

''जिस्म दो होके भी दिल एक हों अपने ऐसे

मेरा आँसू तेरी पलकों से उठाया जाये''[10]

'नीरज' के इस शेर में प्रेम का बोध है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा के ग़ज़लकारों ने भले ही हिन्दी ग़ज़ल को एक नई दिशा में ले जाने का प्रयास

किया लेकिन ग़ज़ल के मूल विषय 'प्रेम' से वे भी अछूते नहीं रहे। बल्ली सिंह चीमा की ग़ज़ल का एक शेर है जिसमें उन्होंने प्रेम का बोध कराया है।

"फूल खिलते हैं सुना है जब भी मुसकाती हो तुम

फूल बेशक ना खिलें तुम मुस्कराओ तो सही"[11]

वास्तव में 'प्रेम तत्व' ग़ज़ल काव्य की पुरानी पहचान है। समकालीन हिन्दी ग़ज़लकारों ने भी इसे महसूस किया है, अतः उनकी ग़ज़लों में भी प्रेम प्रसंगों की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। इसी कड़ी में विनोद तिवाड़ी की ग़ज़ल का एक शेर है –

"सुनो नफ़रत की दीवारें मुहब्बत तोड़ देती हैं

मुहब्बत का तुम्हें जादू जगाना क्यों नहीं आता"[12]

प्रेम जीवन की अमूल्य निधि है। प्रेम से ही समाज बनता है। समाज में आपसी प्रेम होने से ही उन्नति के द्वार खुलते हैं लेकिन जहाँ प्रेम का भाव नहीं होता वहाँ ईर्ष्या एवं द्वेष की भावनाएं पैदा होती हैं और इससे समाज का पतन होता है। ज़हीर कुरेशी ने भी अपनी ग़ज़लों में प्रेम सौन्दर्य का चित्रण किया है। उनका एक शेर द्रष्टव्य है –

"इस ज़ीवन का सार न जाना,

ढाई अक्षर प्यार न जाना"[13]

'प्रेम' दो दिलों को जोड़ने का कार्य करता है। प्रेम से ही मानव जीवन सार्थक बनता है वरना नफ़रत की भावनाएं तो जीवन को अंधकार में डालती हैं। देवेन्द्र आर्य की ग़ज़लों में भी प्रेम का भाव दृष्टिगोचर होता है। उनका एक शेर है –

"मैं हुस्न और सलीके–सा उसमें रहता हूँ

वो साँस लेती है मुझमें मेरे अहम की तरह"[14]

'प्रेम' ग़ज़ल की आत्मा की तरह है। आज भले ही हिन्दी ग़ज़लें सामाजिक अभिव्यक्तियों से जुड़ी हैं लेकिन उनमें प्रेम का भाव भी समाहित है। विनय मिश्र की ग़ज़लों में भी प्रेमाभिव्यक्ति का बोध है। उनकी ग़ज़ल का एक शेर द्रष्टव्य है –

''मेरी आँखों में खुशी के दल के दल मुरझा गए

तुम गए तो इस सरोवर के कमल मुरझा गए''[15]

विनय मिश्र के इस शेर में प्रेम की अभिव्यक्ति है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल परंपरा में और भी बहुत से ग़ज़लकारों ने प्रेमाभिव्यक्ति की भावनाओं का चित्रण अपनी ग़ज़लों में किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि प्रेम ग़ज़ल का मूल विषय है। हिन्दी ग़ज़लों में भी प्रेम का निरूपण किया गया है। साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़लों में बड़ा व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। लेकिन इस दौरान भी ग़ज़लकारों ने प्रेम विषय को अपनी ग़ज़लों का माध्यम बनाया है।

सन्दर्भ सूची

1. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल, डॉ. मधु खराटे, पृ. 27
2. हिन्दी ग़ज़ल की परम्परा, हरेराम समीप, पृ. 18
3. बनारस की हिन्दी ग़ज़ल, सं.–विनय मिश्र, पृ. 37
4. ग़ज़ल लेखन परम्परा और हिन्दी ग़ज़ल का विकास, डॉ. जियाउर रहमान ज़ाफ़री, पृ. 50
5. समकालीन हिन्दी ग़ज़ल : पहचान और परख, डॉ. साएमा बानो, पृ. 69
6. हिन्दी साहित्य को ग़ज़लों के प्रदेय का मूल्यांकन, डॉ. नेहा कल्याणी, पृ. 125
7. आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल : प्रयोग एवं परम्परा, डॉ. विजय लक्ष्मी पाण्डेय, पृ. 51
8. साठोत्तरी हिन्दी ग़ज़ल में समसामयिकता, डॉ. मस्के सन्तोष विष्णु, पृ. 49
9. साये में धूप, दुष्यन्त कुमार, पृ. 40
10. हिन्दी ग़ज़ल के नवरत्न, डॉ. मधु खराटे, पृ. 87

11. आलोचना की यात्रा में हिन्दी ग़ज़ल, सं. डॉ. जीवन सिंह, पृ. 45
12. समकालीन हिन्दी ग़ज़लकार : एक अध्ययन, हरेराम नेमा 'समीप', पृ. 138/139
13. हिन्दी ग़ज़ल और ग़ज़लकार, डॉ. मधु खराटे, पृ. 162
14. अष्टछाप, सं.–नचिकेता, पृ. 151
15. जिन्दगी आने को है, विनय मिश्र, पृ. 100